संक्षिप्त परिचय

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जिला करौली का क्षेत्र पुराने करौली राज्य तथा जयपुर राज्य की गंगापुर एवं हिण्डौन निजामतों में आता है। कल्याणपुरी नामक इस क्षेत्र को वर्तमान स्वरूप प्रदान करने का श्रेय यदुवंसी राजाओं को जाता है। कार्ल मार्क्स और कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक में भी इसका वर्णन किया है। करौली राज्य अप्रैल 1949 को मत्स्य संघ में सम्मिलित हुआ बाद में जयपुर राज्य के साथ मिलकर वृहत संयुक्त राज्य राजस्थान का भाग बना। राजस्थान सरकार द्वारा 1 मार्च 1997 को सवाईमाधोपुर जिले की पांच तहसीलों को मिलाकर एक अलग जिला करौली का गठन किया। 15 जुलाई 1997 को करौली जिला निर्माण की अधिसूचना जारी करते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंह शेखावत ने 19 जुलाई 1997 को इस जिले का उद्धाटन किया। 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या 1458459 तथा क्षेत्रफल 5043 वर्ग किलोमीटर है। राज्य की प्रमुख नदी चम्बल इस जिले को मध्यप्रदेश राज्य से अलग करती है। इस जिले में बहुसंख्या में पाये जाने वाले किले एवं गढ इसके पुराने गौरव की ओर संकेत करते है। इनमें से तिमनगढ, उॅटगिरी, मण्डरायल के किलों का देश के मध्यकालीन इतिहास में प्रमुख स्थान रहा है। तिमनगढ के किले पर यदुवंश की प्रमुखता रही है। सन् 1093 से 1159 में राजा तिमनपाल इस वंश का शक्तिशाली राजा था, जिसने अपनी शक्ति को बढाकर तिमनगढ का निर्माण कराया। ऐतिहासिक महापुरूषों के नाम की अनेक छतरियां इस क्षेत्र में आज भी मौजूद है। तिमनगढ, करौली, हिण्डौन आदि स्थानों में पाये गये प्रारम्भिक तथा मध्ययुग के मूर्तिकला एवं वास्तुकला के नमूने पुराने समय में भव्य मंदिरों का होना सि़द्ध करते है। राजा मोरध्वज की नगरी गढमोरा करौली जिले में है, जहां आज भी पुराने अवशेष मौजूद है।

भौगोलिक स्थिति एवं जलवायु

करौली अपनी भौगोलिक विशिष्टताओं के लिए भी विख्यात है। यह जिला प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर एवं विध्याचंल व अरावली पर्वत मालाओं से आच्छादित है। जिले का कुछ भाग समतल एवं कुछ भाग उॅचा नीचा एवं पहाडियों वाला है। करौली मण्डरायल उपखण्ड को पहाडी इलाका कहा जाता है जबकि बाकी क्षेत्र सामान्यता समतल एवं मैदानी है। मैदानी क्षेत्र उपजाऊ है तथा यहॉ की मिट्टी हल्की एवं रेतीली है। करौली एवं मण्डरायल उपखण्ड का क्षेत्र, जो स्थानीय भाषा में डांग कहलाता है, पहाडियों एवं नदियों से भरा है।

जिले की ऊॅचाई समुन्द्र की सतह से 400 से 600 मीटर तक है। जिले के पश्चिम में दौसा, दक्षिण पश्चिम में सवाईमाधोपुर, उत्तर पूर्व में धौलपुर तथा पश्चिम उत्तर में भरतपुर जिले की सीमाएं लगती है। यह जिला 26 डिग्री 3 सै. से 49 डिग्री उत्तर पश्चिम अक्षॉश तथा 76 डिग्री 35′ से 77 डिग्री 26′ पूर्व देशान्तरों के मध्य स्थित है।

जिले में अल्पकालीन मौसम के अलवा शेष समय जलवायु शुष्क रहती है। सर्दी नवम्बर माह के प्रथम सप्ताह से मार्च तक रहती है, जबकि गर्मी मार्च के अन्त से जून के तीसरे सप्ताह तक रहती है। जिले की सामान्य वार्षिक वर्ष 668.86 मि.मी. है। जिले में औसतन 35 दिन वर्षा होती है। जिले का दैनिक अधिकतम तापमान का औसत मई माह में 49 डिग्री सेल्सीयस रहता है तथा न्यूनतम 2.00 डिग्री सैल्सि. जनवरी में रहता है।

प्रशासनिक व्यवस्था

प्रशासनिक व्यवस्था के अन्तर्गत जिला कलेक्टर जिले का सर्वोच्च अधिकारी होने के साथ–साथ समस्त प्रशासनिक एवं कानून व्यवस्थाओं के लिए उत्तरदायी है। जिले को छः उपखण्डो करौली, हिण्डौन, सपोटरा, मण्डरायल, टोडाभीम एवं नादौती में विभाजित किया हुआ है। इन उपखण्डों को 5 पंचायत समिति एवं 6 तहसीलों में विभाजित कर क्षेत्राधिकारी निर्धारण किया हुआ है। जिलें में तीन नगरपालिका क्रमशः करौली, हिण्डौन एवं टोडाभीम हैं। जिले के प्रशासनिक स्वरूप में जनभागीदारी के रूप में एक लोकसभा सदस्य तथा चार विधानसभा सदस्य है।

भूगर्भ एवं खनिज

जिला करौली एक तरफ से चम्बल तथा तीन तरफ से मैदानों से घिरा हुआ है। इसके मैदान कैमब्रियन–पूर्व की आग्नेय चट्टानों तथा उनकी तलछट से बनी चट्टानों के रूपान्तरण से बने है । अरावली की पूर्व चट्टाने स्फटिक, अभ्रक, नाईसिस्ट, मिग्मा टाइटस आदि की बनी हुई है। महान विंध्य श्रेणी की चट्टाने जिनमें कैमूल, रीवा, भाण्डेर प्रमुख है, विभिन्न प्रकार के सलेटी पत्थर, बालू पत्थर तथा चूना पत्थर से परिपूर्ण है। जिला अनेक प्रकार के धात्विक एवं अधात्विक खनिजों से परिपूर्ण है। धातुओं में शीशा, तॉबा, लोहा अयस्क आदि तथा अधातुओं में चूना, पत्थर, चिकनी मिट्टी, सिलिका ,सैलरूडा आदि प्रमुख रूप से पाये जाते है।

इसके अलावा जिले में लेट्राईट, रेड ऑक्साईड, बैनेटोनाईट, बेराईट, मैगनीज मिट्टी तथा काली मिट्टी पाई जाती है । जिले में विभिन्न प्रकार की चट्टानों से मिलने वाले खनिज जैसे ईमारत बनाने के पत्थर, सजावट के पत्थर आदि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है । भाण्डेर श्रेणी का गुलाबी पत्थर एवं सफेद निशानों वाला पत्थर करौली एवं हिण्डौन क्षेत्र में काफी मात्रा में पाया जाता है । सीमेन्ट श्रेणी का चूना पत्थर एवं सिलिकासैण्ड सपोटरा ,नादौती क्षेत्र मे पाया जाता है। खनिज अभियन्ता करौली के अन्तर्गत इस जिलें की छः तहसीलों के अलावा सवाई माधोपुर जिले की दो तहसील गंगापुर एंव बामनवास आती है । इस क्षेत्र में मुख्यरूप से खनिज , सेण्ड स्टोन , मैशनरी स्टोन , सोप स्टोन , सिलिका सेण्ड इत्यादि का खनन होता है । इस खण्ड में कुल 260 खनन पटटे स्वीकृत है । जिनका क्षेत्रफल 15568 हैक्टर है । जिसमें से करीब 13210 हैक्टर क्षेत्र में खनिज सेण्ड स्टोन का है । उक्त 260 खनन पटटों से स्थिर भाटक रू 11059000 प्राप्त होता है एंव अधिक अधिशुल्क रायल्टी कलेक्टशन ठेंको को शामिल करते हुए वित्तीय वर्ष 2001–02 में कुल 381.06 लाख की आय विभाग को हुई थी ।

वनस्पति, वन सम्पदा

जिले मे पाये जाने वाले महत्वपूर्ण पेड़ नीम बबूल ,बेरी, धौंक, रोंझ,तेन्दु, सालर, खैर, सनथा, जामुन, आम, घनेरी, बॉस, खेजडा, बरगद, पीपल आदि है। इस क्षेत्र में पाई जाने वाली प्रमुख जडी बूटियॉ ओधीझाडा, चीचड़ा, पोलर, कालीलम्प, लपला, कैंच, गूगल आदि है। जिले में स्थित वनों से इमारती लकड़ी, ईधन, लकड़ी का कोयला, पशुओं के लिए चारा, घास–फूस, तेन्दूपत्ता, गोंद, धौक के पत्ते, शहद, मोम, जड़ी बूटियॉ फल, कत्था, कंरज तथा दूसरी अन्य उपयोगी वस्तुऐं प्राप्त होती है।

जीव जन्तु

जिला करौली वन्य प्राणियों के मामले में सम्पन्न है इसमें विभिन्न प्रकार के वन्य जीव पाये जाते है जिनमें तेन्दुऐं, जंगली कुत्ता, सांभर, नील गाय, चीतल, चिंकारा, जंगली सुअर, रीछ प्रमुख हैं। जिलें में कैलादेवी वन्य अभ्यारण्य सन 1983 में स्थापित किया गया था, जिसको सन 1991 में रणथम्भौर रिजर्व के नजदीक मानते हुए संरक्षित वन क्षेत्र एवं वन्य जीव अभ्यारण्य घोषित किया गया है जिसमे यदा कदा बाघ देखे जा सकते है। अभ्यारण्य का क्षेत्रफल 674 वर्ग कि0मी0 है।

फसल पद्धतिः

जिले मे तीनों मौसमों में फसल की बुबाई का कार्य होता है खरीफ वर्षा पर आधारित है। जो जुलाई माह में प्रारम्भ होता है । इसमें बोई जाने वाली मुख्य फसलें बाजरा, मक्का, तिल, ज्वार, ग्वार आदि हैं। रबी की बुवाई अक्टूबर से प्रारम्भ होती है, जिसमें मुख्यतया जौ, चना, गेहूॅ , सरसों की बुवाई होती है। यहॉ के लोगो का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं खनन कार्य है। भूमिगत पानी की कमी एवं सिंचाई सुविधा की कमी के कारण कृषि मुख्यतया वर्षा पर निर्भर है। कृषि विपणन के लिए जिले में हिण्डौन में कृषि उपज मण्डी एवं करौली, टोडाभीम में गौण मंडी हैं।

हस्तकला

करौली की हस्तकला में प्रमुख स्थान लाख की चूडियों का है लगभग एक लाख रूपये की चूडियों का प्रतिवर्ष अन्य प्रांतों में निर्यात किया जाता है। चूडियों बनाने का काराबार जिले में हिण्डौन एवं करौली शहरों में स्थानीय लखेरा एवं मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों द्वारा किया जाता है। इस कार्य में करीब पांच सौ लोगों को रोजगार मिला हुआ है। इसके अलावा करौली जिले में लकडी के खिलौने, घरेलू उपयोग की सामग्रियों में चकला–बेलन, दही बिलौने की रई, लकके चम्मच एवं चारपाई व दीवान आदि भी बनाएं जाते हैं। वर्तमान में पत्थर तराशी कर मूर्तियों एवं जाली झरोखे बनाने का कार्य भी रीको क्षेत्र हिण्डौन व करौली में किये जाने लगा है।

सामाजिक एवं सॉस्कृतिक गतिविधियॉ

जिले मे लोगों के सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में मेले एवं त्यौहारों का महत्वपूर्ण स्थान है। अधिकॉश मौसमी एवं धार्मिक महत्व के है। इन मेलों का व्यापारिक, पर्यटन एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एकता के लिए महत्वपूर्ण स्थान हैं। जिले के मुख्य मेले कैलादेवी मेला, महावीरजी, मेहन्दीपुर बालाजी एवं मदनमोहनजी के है, जिनमें लाखों की संख्या में दर्शनार्थी आते है। राज्य के अन्य हिस्सों की तरह इस जिले में भी हिन्दुओं के रक्षाबन्धन, होली, दीपावली, जन्माष्टमी, दशहरा, गणगौर तथा मुसलमानों के इदुलजुहा, रमजान, इदुलफितर त्योहार प्रमुख हैं।

ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल

जिले में निम्नलिखित विशेष महत्व के स्थान है

वर्तमान जिला मुख्यालय करौली राजपूतानें की प्राचीन रियासतों में से एक प्रमुख रियासत थी। यहां के शासकों का सन 1100 से लेकर सन 1947 तक का गौरवशाली इतिहास रहा है। रियासत के यदुवंशी राजाओं ने अपनी गरिमा की सुरक्षा, प्रजा के संरक्षण व प्राकृतिक आपदाओं के संधारण हेतु अनेक महल, किले व गढियों का निर्माण कराया। इन महलों किलों व गढियों में वास्तु विशेषज्ञता, स्थापत्य कला और चित्रकारी के दुर्लभ नमूने देखने को मिलते है। एक प्राचीन राज्य होने के कारण करौली में ऐतिहासिक, धार्मिक व पर्यटक महत्व के स्थानों की बहुलता के साथ क्षेत्र में पुरा वैभव विखरा पडा है।

करौली शहर

करौली जिला मुख्यालय पूर्व में करौली राज्य की राजधानी थी। करौली कस्बे की स्थापना 1348 में यादववंश के राजा अर्जुनपाल ने की थी। इसका मूलतः नाम कल्याणपुरी था जो कल्याणजी के मन्दिर के कारण प्रसिद्व था। इसको भद्रावती नदी के किनारे होने के कारण भद्रावती नगरी भी कहा जाता था। करौली कस्बा चारों तरफ से लाल स्टोन से निर्मित है, जिसकी परिधि 3.7 कि0मी0 है जिसमें 6 दरवाजे 12 खिडकियॉ है। महाराज गोपालसिंह के समय का एक खूबसूरत महल है जिसके रंगमहल एवं दीवाने आम को शीशाओं से बडी खूबसूरती से बनाया गया है। इस कस्बे में काफी संख्या में मन्दिर है जिसमें प्रमुख मन्दिर मदनमोहनजी का है। यह मन्दिर सेन्दर बरामदे एवं सुसज्जित पेन्टिंग से निर्मित है तथा महाराजा गोपालसिंह जी के द्वारा जयपुर से लायी गयी काले मार्बल से निर्मित मदनमोहनजी की मूर्ति है। प्रत्येक अमावस्या को मेला लगता है, जिसमें हजारो की संख्य में लोग दर्शनार्थ आते है करौली मे जैन मन्दिर, जामा मस्जिद, ईदगाह अंजनी माता मन्दिर,गोविन्द देव जी मन्दिर आदि भी धार्मिक आस्था के स्थान है।

हिण्डौन सिटीः

हिण्डौन नगर करौली जिले की सबसे बडी नगरपालिका है। इस पौराणिक एवं ऐतिहासिक नगर की स्थापना किसने की इसके सम्बन्ध में इतिहासकार एकमत नही हैं। सम्भवतः यह भूमि हिरण्यकश्यप व भक्त प्रहलाद की कर्म भूमि रही है। यहां पर आज भी नृसिंह मन्दिर, प्रहलाद कुण्ड, हिरण्यकश्यप के महल, बावड़ियों के अवशेष हैं। यहां से कुछ दूरी पर कुण्डेवा, जगर, दानघाटी पौराणिक स्थान है। जनश्रुतियो के अनुसार महाभारत कालीन हिडिम्बा नामक राक्षसी की कर्मस्थली भी यही क्षेत्रा रहा था। हिण्डौन वर्तमान में जिले का प्रमुख औद्योगिक वाणिज्यिक नगर है यहां से उत्तर–मध्य रेलवे का दिल्ली मुम्बई मार्ग गुजरता है साथ ही राष्ट्रीय राजमार्ग 11 से दूरी 41 कि0मी0 है। यहां पर पत्थर तरासी, स्लेट उद्योग का करोबार बडे स्तर पर किया जाता है

तिमनगढ़ का किला

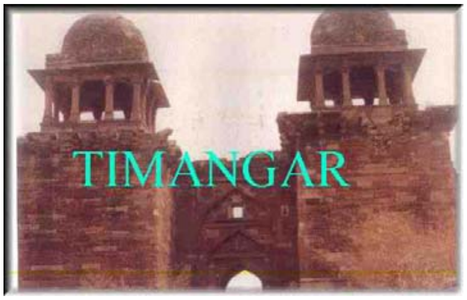

यह किला जिला मुख्यालय करौली से 42 किलोमीटर दूर मासलपुर कस्बे के पास स्थित है। यहां बेजोड़ पुरातत्व संबंधी मूर्तियॉ हैं। प्रचलित मान्यता के अनुसार संवत् 1244 में यदुवंशी शासक तिमनपाल ने इस किले का निर्माण कराया थां। कुछ इतिहासकार इस किले को 1000 वर्ष से अधिक प्राचीन बताते है किले के अन्दर कई शिलालेखों, उपलब्ध प्राचीन कृतियों से पता चलता है कि इसे किसी शिल्पी व कलाप्रेमी ने बसाया था, जो बाद में शासकों के कब्जे मे चला गया। किले के चारों ओर पांच फीट मोटा तथा करीब 30 फीट ऊंचा परकोटा स्थापत्य कला का अनूठा नमूना है। किले के भीतर बाजार, फर्श, बगीची, मन्दिर, कुंए कि अवशेष आज भी मौजूद हैं। पूरा किला अपने अन्दर एक पूरा नगर समेटे हुए हैं। प्रवेश द्वार पर अक्सर ब्रह्मा, गणेश की मूर्तिया नजर आती है, लेकिन यहॉ प्रेत व राक्षसों के चित्र देखने को मिलते है। किले मे जगह –जगह खण्डित मूर्तियों को देखने से ऐसा लगता है कि यहा मूर्तियों की बहुत बडी मण्डी थी। दुर्ग में छोटे – छोटे कमरे भी हैं, जो संभवतः स्नानघर के काम आते होंगे।

मण्डरायल का किला

करौली शहर से 40 किलो मीटर दूर दक्षिण पूर्व में पहाडों के मध्य एक आयताकार पहाडी के नीचे बसी एक मध्यकालीन बस्ती है, जो दो प्रान्तों को विभक्त करते हुए चम्बल नदीं के किनारे मण्डरायल नाम से जानी जाती है । एतिहासिक दृष्टि से एक गजिटयर के अनुसार यह दुर्ग यादवों के इस क्षेत्र में प्रवेश से पूर्व का है । करौली रियासत की विलेज डायरेक्ट्री में इसके निर्माणकर्ता के रूप में बीजाबहादुर को दर्शाया गया है, जिसकी कौम एंव काल का कोई जिक्र नही है । किदवतियों के अनुसार पूर्व में इस दुर्ग पर मियां मकन का आधिपत्य होने के कारण उसी के नाम से कालान्तर में अपभ्रशं होकर दुर्ग का नाम मण्डरायल हो गया । यहां मुख्य दरवाजें के रूप में दो गोलाकार गुबंद है । दूसरा दरवाजा सूर्यपोल नाम हैं, जो रानीपुरा इलाके की तरफ उतरता है। इस दरवाजें की खासियत है कि पौर से प्रातः से साय तक सूर्य का प्रकाश रहता है । इसके अन्दर एक सुरक्षित टांका ओर

बाहर दो तालाब है । तालाब के किनारे त्रिदेव भगवान के मन्दिर ओर बारहदारी है । पूर्व में इस किले की दीवारों पर उर्दु में कुछ घटनायें लिपिबद्व थी , जो अब नष्ट हो चुकी है ।

उंट गिरि दुर्ग

15 वी शताब्दी में स्थापित यह दुर्ग करणपुर के कल्याण पुरा गांव की ऊंची पर्वत श्रृंखला की सुरंगनुमा पहाडी पर स्थित है। लगभग 4 कि0मी0 क्षेत्र में फेले इस दुर्ग में 100 फुट की ऊंचाई से नीचे शिवलिंगों पर पानी गिरता है। इस पानी में बडी मात्रा में शिलाजीत मिलता है। यह दुर्ग भी सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। 1506–07 ई. में सिकन्दर लोदी ने इस पर आक्रमण किया था उस समय इसे ग्वालियर किले की कुंजी कहा जाता था। अंतिम मुगल सल्तनत तक इस किले पर यदुवंशियों का ही आधिपत्य रहा।

देव गिरि

उंट गिरि के पूर्व में चम्बल नदी के किनारे स्थित यह किला खण्डहर होते हुए भी अतीत की अनेक घटनाओं का साक्षी है। परकोटे के नाम पर आज कुछ भी नही मिलता साथ ही अन्दर के सभी आवासीय भागों को नष्ट किया जा चुका है। सन् 1506–07 ई. में सिकन्दर लोदी के आक्रमण के समय इस किले को सबसे अधिक नुकसान पहुचाया गया। वर्तमान में यहां एक बावडी, जर्जर होता शिलालेख तथा कुछ हवेलियों के अवशेष है।

बहादुरपुर का किला

करौली जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर मण्डरायल मार्ग पर ससेड गांव के पास जंगल और सुनसान वातावरण में अटल योद्वा सा खडा बहादुरपुर का किला मुगलकालीन स्थापत्य कला का बेजोड नमूना है। दो मंजिला नृप गोपाल भवन, सहेली की बाबडी कलात्मक झरोखे 18 फीट लम्बी चीरियों की आमखास कचहरी, पंचवीर, मगधराय की छतरी दर्शनीय है। यदुवंशी राजा तिमनपाल के पुत्र नागराज द्वारा निर्मित इस किले का विस्तार सन 1566 से 1644 तक होता रहा। जयपुर के राजा सवाई जयसिह ने इस किले में तीन माह तक प्रवास किया था।

शहर किला एवं छतरी

नादौती तहसील के ग्राम शहर में यह किला उंची पहाडी पर बना हुआ है तथा आज भी सुरक्षित एवं आबाद है। यहॉ के ठिकानेदार आमेर के राजा पृथ्वीराज के पुत्र पच्चाण के वंशज है। इसमें देवी का प्राचीन मंदिर है।

फतेहपुर किला

करौली जिला मुख्यालय से लगभग 30 कि.मी. दूर कंचनपुर जाने वाले मार्ग पर स्थित यह किला यदु शासकों के एक बडे जागीरदार हरनगर के ठाकुर घासीराम द्वारा 1702 ई. में निर्मित किया गया। यह किला सुरक्षित अवस्था में है।

किला नारौली डांग

सपोटरा उपखण्ड मुख्यालय से .... दूरी पर स्थित यह किला पहाडी के उपर बना हुआ है। तत्कालीन करौली एवं जयपुर रियासतों की सीमा पर स्थित नारौली डांग गांव में स्थानीय जागीरदार द्वारा इसका निर्माण कराया गया था।

भॅवरविलास पैलेस

करौली के पूर्व शासक रहे राजा भंवर पाल के नाम से पूर्व नरेशों का यह आवास उत्कृष्ट वास्तु एवं शिल्प समेटे हुए नगर के दक्षिण में मंडरायल रोड पर स्थित है। वर्तमान में इसे होटल का रूप दिया हुआ है।

हरसुख विलास

करौली में आने वाला प्रत्येक अतिथि हरसुख विलास की वास्तु एवं शिल्प से प्रभावित हुए बिना नही रह सकता।

रामठरा किला

भारत के प्रमुख वन्य जीव अम्भारण्य रगथम्भोर एवं घना पक्षी बिहार भरतपुर के बीच करौली जिले के सपोटरा उपखण्ड में स्थित रामठरा फोर्ट कैलादेवी राष्ट्रीय अम्भारण्य से मात्र 15 किलोमीटर दूर है।

सुख विलास बाग एवं शाही कुण्ड

जिला मुख्यालय स्थित भ्रदावती नदी के किनारे एक सुन्दर महलनुमा चारदिवारी के अन्दर बाग लगाया गया था जिसका उपयोग रानियॅा अपने आमोद–प्रमोद के लिए करती थी इसे सुख विलास बाग कहते है। शहर के पर कोटे के बहार सुखविलास के पास भव्य शाही कुण्ड बना हुआ है तीन मंजिला बावडीनुमा इस कुण्ड की बनावट अद्वितीय है इसमें प्रत्येक मंजिल पर बरामदे एवं उतरने हेतू चारो तरफ सिढियां बनी है। रियासत काल में इस कुण्ड का उपयोग शहर में पेयजल सप्लाई के लिए किया जाता था।

दरगाह कबीरशाह

करौली पश्चिम द्वार पर वजीरपुर गेट एवं सायनाथ खिडकियां के मध्य आज से लगभग 120 वर्ष पूर्व बनाई गई एक सूफी संत की दरगाह उत्कृष्ट शिल्प का नमूना है। इसकी खासियत यह है कि इसमें दरवाजे भी पत्थर के बनाये हुए है। पत्थर पर की गई नक्कासी बरबस ही दर्शको का मन मोह लेती है।

रावल पैलेस (राजमहल)

तेरहवी शताब्दी में स्थापित राजमहल (रावल पैलेस) लाल व सफेद पत्थर के शिल्प का बेजोड नमूना है। नक्कशी व कलात्मक चितराम से सुसज्जित विशाल द्वार, जालीदार झरोखे, तोपखाना, नाहर कटहरा, सुर्री गुर्ज, गोपालसिंह अखाडा, भॅवर बैंक, नजर बगीची, मानिक महल, फब्बारा कण्ड, बारह दरी, गोपाल मन्दिर, दीवान ए आम, फौज कचहरी, किरकिरी खाना, ज्ञान बॅगला, शीश महल, मोतीमहल, हरविलास, रंगलाल, गेंदघर, टेडा कुॅआ, जनानी ड्योढी आदि कुशल स्थापत्य के साथ–साथ यहां की सभ्यता व संस्कृति के परिचायक है।

अन्य

करौली में महाराजा गोपालसिंहजी की छतरी, रणगमा तालाब, सुख विलास कुण्ड, एवं शिकारगंज आदि करौली के पुरा वैभव प्रतीक है। साथ ही जिले के सपोटरा में नारौली डांग का किला, गढमोरा (नादौती) में राजा मोरध्वज का महल व मन्दिर, शहर सोप का ऊची पहाडी पर निर्मित किला, हिण्डौन की पुरानी कचहरी व प्रहलाद कुण्ड जैसे दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल हमारी संस्कृति की पहचान है।

धार्मिक स्थल

महावीर जी

दिगम्बर जैन संप्रदाय का भारत का एक प्रमुख स्थान है। यहा पर भगवान महावीर की 400 वर्ष पुरानी मूर्ति है। महावीर जी में निर्मित मन्दिर आधुनिक एवं प्राचीन शिल्पकला का बेजोड़ नमूना है। मन्दिर को एक बहुत बडे प्लेटफार्म पर सफेद मार्बल से बनाया गया है। इसकी छतरी दूर से दिखायी देती है, जो लाल बलुआ पत्थर की है। मन्दिर पर नक्काशी का कार्य भी अति सुन्दर है। मन्दिर के ठीक सामने मान स्तम्भ बना हुआ है। जिसमें जैन तीर्थकर की प्रतिमा है। मन्दिर के पीछ कटला एवं चरण मन्दिर है, जहां पर दर्शनार्थी श्रद्वापूर्वक दर्शन को जाते है। प्रतिवर्ष चैत्र सुदी 11 से बैशाख सुदी 2 तक (मार्च–अप्रैल) मेला लगता है, जिसमें लाखों लोग विभिन्न क्षेत्रों से यहां आते हैं। मेले के अन्त में रथया़त्रा का आयोजन किया जाता है।

कैलादेवी मन्दिर

करौली से 24 कि0मी0 दूर यह प्रसिद्व धार्मिक स्थल है। जहॉ प्रतिवर्ष मार्च – अप्रैल माह मे एक बहुत बडा मेला लगता है। इस मेले में राजस्थान के अलावा दिल्ली, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश के तीर्थ यात्री आते है। मुख्य मन्दिर संगमरमर से बना हुआ है जिसमें कैला (महालक्ष्मी) एवं चामुण्डा देवी की प्रतिमाऐं हैं। कैलादेवी की आठ भुजाऐं एवं सिंह पर सवारी करते हुए बताया है। यहॉ क्षेत्रीय लॉगुरियॅा के गीत विशेष रूप से गाये जाते है। जिसमें लागुरियॅा के माध्यम से कैलादेवी को अपनी भक्ति–भाव प्रदर्शित करते है।

बालाजी

यह एक छोटा सा गॉव टोडाभीम तहसील से 5 कि0मी0 दूर है तथा जयपुर–आगरा राष्ट्रीय राज्यमार्ग से जुडा हुआ है। हिन्दुओ की आस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। यहॉ पर पहाडी की तलहटी मे निर्मित हनुमानजी का बहुत पुराना मन्दिर है। लोग काफी दूर–दूर से यहॉ आते है। ऐसी मान्यता है कि हिस्टीरिया एवं डिलेरियम के रोगी दर्शन लाभ से स्वस्थ होकर लौटते है। होली एवं दीपावली के त्यौहार पर काफी संख्या मे लोग यहॉ दर्शन के लिए आते है।

मदनमोहन जी

श्री मदन मोहन देवालय मुख्यालय के आंचल में महलों के पास वृहद भव्य परिसर के धेरे मे स्थित है जहां भगवान राधा मदनमोहन के साथ श्रीगोपालजी की मनमोहनी प्रतिमाएं प्रतिष्ठित है। जिनकी सेवा गौड सम्प्रदायी गुसाईयों के माध्यम से बहुत सुन्दर तरीकों से होती आ रही है। मंगला से शयन तक हजारो भक्तों का समुह प्रत्येक झांकी पर उपस्थित रहता है। मदनमोहनजी की कुल आठ झांकी सकल मनोरथ पूर्ण करने वाली हैं । मूलरूप से इन दोनो प्रतिमाओं को उडीसा और वृदावन में प्रतिष्ठित कराया गया था। कालान्तर में यही प्रतिमाएं विभिन्न श्रोतों के माध्यम से आज इस पावन नगरी में भक्तों के वास्ते प्रेरणा की श्रोत बनी हुई है।

शिल्प एवं उद्योग

करौली जिलें में शिल्प के उत्कृष्ट नमूने पाये जाते है । वास्तुशिल्प के रूप में महाराजा गोपाल सिंह के शासन काल से शिल्प के क्षेत्र में भारी विकास हुआ है । जिसका साक्षात प्रमाण करौली दुर्ग के रूप में है । 14वीं शताब्दी में निर्मित यह महल जहॉ साधारण दिखाई देते है । वही इस किले का बाहरी हिस्सा जो 17वी शताब्दी में बनाया गया था । शिल्प का उत्कृष्ट उदाहरण है । बैहरदह में बौहरों की हवेली एंव करौली नगर के कई कलापूर्ण एंव भवनों का शिल्प दर्शन अपनी ओर आकर्षित कर लेता है । इनके अतिरिक्त मा साहब का मन्दिर, दीवान साहब की हवेली, पदम तालाब की हवेलियां एंव रतियापुरा एंव कसारा की परेंडी विशेष शिल्पकला के नमूने है ।

जिला एक दृष्टि में

भौगोलिक स्थिति	26 डिग्री 3′ से 26 डिग्री 49′ उत्तरी अक्षांश 76 डिग्री 35′ से 77 डिग्री 26′ पूर्वी देशान्तर के मध्य			
भौगोलिक क्षेत्रफल	5069.64 वर्ग किमी0	वन क्षेत्र के अन्तर्गत		1658.19 कि0मी0
समुद्रतल से ऊँचाई	400 से 600 मीटर			
तापमान	अधिकतम	49 डिग्री	न्यूनतम	2 डिग्री
जिले की औसत वर्षा	668.86 मिलीमीटर	1 जनवरी 05 से आज तक की वर्षा		555.23 मि.मी.
भूमि उपयोग (हैक्टर में)	भौगोलिक क्षेत्रफल	505217	वन	172499
	अकृषि योग्य भूमि	19361	स्थाई चरागाह	30818
	कृषि योग्य भूमि	185871		
शुद्ध सिंचित क्षेत्र (हैक्टर में)	115076 हैक्टर			
	नहरो से	19761	तालाबों से	5471
	नलकूपो से	29320	कुएं से	60470
	अन्य से	54		

लोक सभा क्षेत्र	करौली–धौलपुर			
विधान सभा क्षेत्र	4 (करौली, हिण्डौन, टोडाभीम, सपोटरा)			
उप खण्ड	6 (करौली, हिण्डौन, टोडाभीम, सपोटरा, मंडरायल, नादौती)			
तहसील	6 (करौली, हिण्डौन, टोडाभीम, सपोटरा,मंडरायल, नादौती)			
उप तहसील	2 (करनपुर, मासलपुर)			
पंचायत समिति	5 (करौली, हिण्डौन, टोडाभीम, सपोटरा, नादौती)			
नगरपालिका	3 (करौली, हिण्डौन, टोडाभीम)			
पटवार मंडल	254			
ग्राम पंचायत	223 (101 ग्रा.प. डांग क्षेत्र में)			
राजस्व ग्राम	878			
आवाद ग्राम	836			
मुख्य व्यवसाय	खनिज, बीड़ी उद्योग			
मुख्य नदियाँ	भद्रावती, गम्भीर, बरखेड़ा, चम्बल			
पशु गणना	8,14,427			
जनसंख्या	कुल	1458459	पुरुष	784943
			महिला	673516
लिंग अनुपात (प्रति 1000 पु.)	858			

जनसंख्या घनत्व	264 प्रति वर्ग कि.मी.			
साक्षरता	कुल	67.34 प्रतिशत		
	महिला	49.18 प्रति.	पुरुष	82.96 प्रति.
मेले एवं त्यौहार	कैलादेवी मेला	श्री महावीर जी मेला	मदन मोहन जी का मेला	
	बाला जी का लक्खी मेला	अंजनी माता का मेला		
पर्यटन स्थल	ऐतिहासिक स्थल	तिमनगढ़ का किला	मण्डरायल का किला	
	आध्यात्मिक स्थल	श्री महावीर जी	कैलादेवी	
		मदन मोहन जी का मंदिर	मेहन्दीपुर बाला जी	

पुलिस उपअधीक्षक वृत	4	पुलिस थाना	16
		पुलिस चौकी	16
जेल	2		